द्वितीय अध्याय

'पानी के प्राचीर' की कथावस्तु-विश्लेषण सहित

प्रस्तावना -

कथानक या कथावस्तु उपन्यास का मुख्य तत्व है। सतही तौर पर देखने से हमें लगता है कि, आँचलिक उपन्यासों एवं अन्य उपन्यासों के तत्वों में समानता दिखाई देती है, पर वास्तव में ऐसा नहीं है। थोडी गहराई के साथ छानबीन करने पर विदित होगा कि, आँचलिक उपन्यास की कथावस्तु में ऐसी कई विशेषताएँ हैं जो उसे अन्य उपन्यासों से अलग करती हैं जैसे इसका किसी एक क्षेत्र विशेष तक ही सीमित होना।

आँचलिक कथाकार किसी एक अंचल का कथावस्तु के रूप में चयन करता है। इस अंचल विशेष को उसकी समग्रता के साथ प्रस्तुत करने के प्रयत्न में कथाकार के लिए उस अंचल की प्रत्येक हलचल तथा उसे पैदा करने वाला प्रकृति - परिवेशजनित एक- एक कारण विशिष्ट एवं महत्वपूर्ण हो जाता है। वहाँ के जन-जीवन में उठनेवाली एक भी तरंग को वह अनदेखा नहीं कर सकता ; क्योंकि इन उपन्यासों का प्रतिपाद्य एक निश्चित सीमा - क्षेत्र के जीवन की संपूर्ण चेतना एवं छबि का उद्‌घाटन करना होता है।

आँचलिक उपन्यास का कथा - क्षेत्र गांव भी हो सकता है, शहर भी, छोटा अंचल भी ,बडा अंचल भी। कथानक, अंचल केंद्रित होता है इसलिए उस अंचल - विशेष के जन, उनके क्रियाकलाप, स्थितियाँ, घटनाएँ आदि उसी के रंग में रंगी होती हैं और उनकी परंपरा, प्रगति, विश्वास, स्वार्थ, निरीहता, भोलापन, कथानक के अविभाज्य अंग बन जाते हैं। इसप्रकार विविध जीवन-रंगों के ताने-बाने से बुना कथानक अधिक सुंदर और संवेदना को विस्तार देने वाला बन जाता है।

आँचलिक उपन्यास की कथा अधिक यथार्थ होती है। उपन्यास की कथा वास्तविकता की आधारभूमि पर कल्पना का भवन निर्माण करती है। और आँचलिक उपन्यास भी उपन्यास होता है। इसलिए यथार्थ की आधार-भूमि को वह छोड नहीं सकता। अंतर इतना होता है कि, जहाँ अन्य उपन्यासों का यथार्थ सामान्य यथार्थ होता है वहाँ आँचलिक उपन्यासों का यथार्थ, विशिष्ट यथार्थ होता है; क्योंकि वह अंचल की विशिष्ट

समस्याओं एवं जीवन पर आधारित होता है।

आँचलिक उपन्यास की कथा का कलेवर अत्यंत व्यापक एवं बिरवरा हुआ होता है। संपूर्ण अंचल को सशक्त रूप से उद्घाटित करने के लिए यह आवश्यक होता है। इन उपन्यासों की कथा-योजना की एक विशेषता यह है कि उनमें प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी ताकतों का संघर्ष सतत बना रहता है। आँचलिक उपन्यास की कथावस्तु में प्राचीन एवं नवीन का संघर्ष मुख्य रूप से दिखाई देता है।

यथार्थ के प्रति गहरी आस्था आँचलिक कथाकारों की महत्वपूर्ण विशेषता है। इनका कथाकार हमारी जानी-पहचानी दैनंदिन घटनाओं का चित्रण करके यथार्थ का अत्यंत मोहक एवं व्यापक रूप सामने रखता है। कल्पना यहाँ स्वतंत्र उडान न भरकर यथार्थ के साथ सहयोग करती है।

डॉ.आदर्श सक्सेना कहते हैं-

"आँचलिक उपन्यास की कथावस्तु का सबसे महत्वपूर्ण अंग होता है आंचलिक जीवन की समस्याओं का उद्घाटन। यों तो विशिष्ट जीवन आँचलिकता का निर्माणक तत्व होता ही है परंतु उस जीवन का आधार वहाँ की समस्याएँ होती हैं। अत: उनका कलेवर अत्यंत व्यापक होता है।" 1

राजनाथ शर्मा जी ने 'साहित्यिक निबंध'में आँचलिक उपन्यासों के निम्नलिखित तत्व निर्धारित किये हैं-

1) किसी अंचल- विशेष की प्राकृतिक स्थिति एवं सुषमा का अंकन।
2) कथा का आधार वही अंचल विशेष जिसमें स्थानीय लोककथाओं का समावेश।
3) स्थानीय लोक संस्कृति का वैविध्यपूर्ण और विस्तृत चित्रण।
4) सभी प्रकार की स्थितियों का पूर्ण चित्रण।
5) उस अंचल में उठती नवीन जन-चेतना का दृष्टिकोण की संकीर्णता से रहित प्रभावपूर्ण अंकन।

डॉ.रामसागर त्रिपाठी और गुप्त ने अपने 'बृहद् हिंदी निंबध कोश'में आँचलिक उपन्यासों की

कथावस्तु के निम्नलिखित तत्व माने हैं।-

1) कथानक का आँचलिक आधार।

2) लोक-संस्कृति का चित्रण।

3) वहाँ की राजनीतिक चेतना,सामाजिक,धार्मिक और आर्थिक स्थिति का चित्रण।

4) जन-जागरण की नई चेतना।

आँचलिक उपन्यासों की कथावस्तु परपंरागत वस्तु योजना की व्यापकता में,आधिकारक कथा,प्रासंगिक कथा एवं अन्य उपकथाओं का संयोजन कथानक के आवश्यक उपादान के रूप में नहीं होता और न ही उनसे कथानक के विभाजन का कोई आधार प्राप्त होता है। वे तो मात्र आँचलिक जन-जीवन का चित्रण प्रस्तुत करती हैं।

कथावस्तु

डॉ.रामदरश मित्र ने काव्य,समीक्षा और कहानी लेखन की तरह उपन्यास लेखन में भी सफलता प्राप्त की हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में सामाजिक,आर्थिक विषमता तथा शोषण का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया है।समकालिन आँचलिक उपन्यासकारों में मिश्रजी ने अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली है।'पानी के प्राचीर' रामदरश मिश्रजी का एक महत्वपूर्ण आँचलिक उपन्यास है। यह मिश्रजी का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास को हिंदी के आँचलिक उपन्यासों में बहुत बडी प्रतिष्ठा तथा मान-सम्मान प्राप्त हुआ है। इस उपन्यास की कथा *'पांडे पुरवा'* अँचल से संबंधित है।

'पानी के प्राचीर'में चित्रित गाँव एक विशिष्ट गाँव है। वह पूर्वी उत्तर प्रदेश के ऐसे भूभाग से संबधित है,जो अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण नदियों से घिरा हुआ है। इसलिए उसका बाहर की दुनिया के साथ कोई जीवंत और रचनात्मक संबंध नहीं रह गया है। इसी अंचल में मिश्र जी का बचपन गुजरा। इसी कारण मिश्र जी ने इस अभावग्रस्त देहात में जो कुछ अनुभव किया है वही यथार्थ शब्दों में अपने इस उपन्यास में चित्रित किया है। फिर भी परिवर्तित परिस्थिति के अनुसार इस गाँव में भी परिवर्तन अवश्य दिखाई देते हैं। पांडे पुरवा गाँव में आनेवाले परिवर्तनों को मिश्रजी ने बहुत ही सूक्ष्मता के साथ चित्रित किया है। मिश्रजी ने 'पानी के प्राचीर ' में पांडे पुरवा अँचल को एक बिंब बनाया है और उसके जरिए स्वातंत्र्यपूर्व मारत के देहात की यथार्थ कहानी प्रस्तुत की है।

पांडे पुरवा एक अभावग्रस्त गाँव है। इसलिए गाँव के लोगों के जीवन में सदैव ही संघर्ष बना रहता है। केवल होली जैसे तीज-त्यौहार के दिन ही गाँव में राग-रंग चलता रहता है और सामूहिक खुशियों की लहरें उमडने लगती हैं। परंतु यह खुशी का दिन भी बडे भाग्य से साल में केवल एक बार आता है। उसके बाद तो फिर वही सन्नाटा और फिर वही उदासी सारे गाँव पर छा जाती है।

होली के राग-रंग के साथ ही प्रस्तुत उपन्यास की शुरूआत होती है। गाँव के मुखिया कुबेर पांडे का बेटा महेश गाँव के छोकरों का नेतृत्व कर रहा है। ये छोकरे होली में जलाने के लिए लकडियाँ आदि चीजें इकठ्ठा कर रहे हैं। वे निरबल तेली का गोहरा साफ - साफ उडा कर ले जाते हैं। निरबल तेली द्वारा विरोध करने पर महेश निरबल को दोन-तीन लाठियाँ जड देता है। सुमेश पांडे के बेटे निरंजन अर्थात नीरू को यह बात अच्छी नहीं लगती है। क्योंकि, नीरू का कहना है कि, **"भाइयों होली में हमें पुरानी और सडी-गली चीजें डालनी चाहिए। होली में हम लोग अपने पुराने गम को, वैरभाव को जलाते हैं और नया जीवन शुरू करते हैं। यह उपला लोगों का जीवन है, इसे होली में डालना गुनाह हैं।"** 2 नीरू की बात बिना माने छोकरे होली की ओर चले जाते हैं। नीरू सोचने लगता है इन बुरी प्रथाओं को कैसे रोका जाए। होली के पास कैसा कहकहा मचा है यह देखने के लिए नीरू होली की ओर चला जाता है।

महेश ने गाँव के सत्तर साल के बूढे कहार रामदीन को चारपाई के साथ होली में डाल दिया है। महेश ने इस घटना का आरोप नीरू पर लगाया है। मुखिया और नीरू के बीच की कहा-सुनी सुनकर सुमेश पांडे अपने बेटे नीरू को तीन-चार थप्पड जड देते हैं , क्योंकि मुखिया तथा महेश के विरूध्द बोलने की किसी की भी हिम्मत नहीं होती है। महेश कुछ छोकरों का दल बनाकर ऐसे ही सबको सताता रहता है।

मुखिया का आदेश सुनकर सब लडके रामदीन को घसीटकर होली से बाहर निकालते हैं। होली जलाई जाती है और रागरंग शुरू होता है। परंतु नीरू का मन उदास हो जाता है। वह कागजपर कुछ लिखता है और बरम बाबा के टीले पर जाकर पीपल के पेड पर कागज चिपकाता है।

दूसरे दिन सुबह महेश अन्य छोकरों के साथ बरमबाबा के टीले पर जाता है और बरमबाबा के पिंड पर गरम-गरम राख फेंक देता है। वह पिपल पर चिपकाए कागज को पढता है। "आज का त्यौहार प्रेम और एकता का त्यौहार है। आज के दिन हमें अपने सब भाइयों के गले मिलना चाहिए। आज के दिन गाली गलौज करना और सिर-फौडोवल करना कहाँ तक जायज है ? आप सोचें। आप अपने एक भाई की प्रार्थना पर ध्यान देंगे यह मुझे उम्मीद है।" 3- और नीरू को गालियाँ देते हुए कागज के टुकडे -टुकडे कर

देता है।

दोपहर के बाद लोग वर्षारंभ की खुशियाँ मना रहे हैं नए कपडे पहनकर रंग खेलते हुए फाग गा रहे हैं। मगर नीरू की कमीज फटी हुई है। नीरू के भाई-बहन नए कपडे के लिए तडप रहे हैं। नीरू इस व्यथा को सह नहीं सकता है और मुखिया के द्वार पर बैठ जाता है। महेश नीरू की फटी कमीज को और फाड कर नीरू की गरीबी का मजाक उडाता है। नीरू उदास होकर टीले की ओर जाने लगता है।उसे रास्ते में पेड के नीचे बैठा रामदीन दिखाई देता है। वह चने के दाने निखोर-निखोर कर खा रहा है। नीरू को रामदीन पर दया आती है और वह रामदीन के लिए खाना लाने अपने घर चला जाता है। उसने घर में देखा कि खाना खतम हुआ है। वह उदास होकर बरमबाबा के टीले पर चला जाता है। वहाँ संध्या आ पहुँचती है। दोनों एक-दूसरे के चेहरे पर अबीर और कुंकुम रगड देते हैं। रास्तें में चलते-चलते नीरू संध्या के सामने अपने मन की व्यथा खोल देता है। संध्या अपने घर से एक पोटली लाकर नीरू के हाथ सौंप देती है। नीरू रामदीन के पास जाकर पोटली खोलता है। रामदीन खाना खाते - खाते तृप्त होने लगता है और उसकी आँखों से आशीर्वाद की करूणा बरसने लगती है।

फाग की मस्ती उतर रही है। लोग खेतों में मेहनत कर रहे हैं। नीरू पिता के साथ खेती में काम भी करता है और स्कूल भी जाता हैं। दिनभर मेहनत करने से सुबह उसकी नींद जल्दी नहीं खुलती है। इसलिए उसे हर रोज सुबह पिताजी की डाँट खानी पडती है और स्कूल में देर होने से मास्टरजी उसकी पिटाई करते हैं। पंरतु वह पढाई में तेज है।उसके सामने अन्य छोकरों को मास्टरजी की मार खानी पडती है। महेश को यह उपमान महसूस होता है। वह नीरू से बदला लेना चाहता हैं। परंतु नीरू से सीधे मुकाबला करना संभव नहीं है।

चैत्र की नवरात्रि शुरू हो गइ है। नवरात्रि की आखिरी रात बीतने पर पांडेपुरखा का मेला लगा है। गाँव के दक्खिन में एक बडे- से ताल के पास काली माई के मंदिर में अनेक गाँवों के लोगों की भीड लगी हुई है। लोग देवी के दर्शन के लिए तथा भूत- प्रेत उतरवाने के लिए आए हैं। देवी का पुजारी रामधन तेली ध्यानस्थ बैठा हुआ है। लोग विरहा गाते-गाते मेले में झूंड बनाकर घूम रह है। बीस - बाईस औरतें खेल रही हैं। पुजारी प्रत्येक औरत के सामने जाकर कौन है, कहाँ से आई है ? आदि प्रश्न पूछ रहा है। सब लोग आश्चर्य तथा भय से यह दृश्य देख रहे हैं। परंतु नीरू के मन में इन बातों के प्रति अविश्वास उत्पन्न हो रहा है। इतने में गेंदा आकर नाचने लगती है। पुजारी के द्वारा पूछने पर वह नीरू के घर का हुलिया बताती है। नीरू को लगता है कि यह जरूर गेंदा की बदमाशी है।

सुमेश पांडे भी एक सोखा हैं। अनेक ब्रहम, डीह बाबा उनके सिर आते हैं। गेंदा की बदमाशी सुनकर वे जोश में आ जाते हैं। और जोर से हूँकार कर मैदान में पहुँच जाते हैं। वे गेंदा से कडककर पूछते हैं। गेंदा का सारा नशा गायब होता है। गेंदा का झोंटा पकडकर हिलाते हुए कहते हैं , गडंत है गडंत है, नाते - हीते का गडंत है।'' गेंदा के भाई बैजनाथ से यह अपमान सहा नहीं जाता है। इतने में कहीं से हो हल्ला सुनाई देता है, लोग उसी ओर दौडे जा रहे हैं। गुंडई कर रहे पकडिहा के सब गुंडों को थानेदार पकड कर ले जा रहे हैं।

चैत पूर्णिमा के रात के तीसरे पहर में दारोगाजी अपने तीन-चार सिपाहियों के साथ बैजनाथ को घेर कर खडे हैं। बैजनाथ के पास उसकी रखैल बिंदिया चमाइन मुँह नीचे करके बैठी है। दारोगाजी दोनों को गालियाँ दे रहे हैं और बैजू तथा बिंदिया की पिटाई भी कर रहे हैं। दारोगा ने गाँव के मुखिया को बुलाया है। मुखिया बैजू से हमदर्दी दिखाते हुए दारोगाजी से बैजू को छोड देने की बिनती करता है। दारोगा गरजकर कहते हैं, ''छोड क्या दें ? इसी तरह अपराधियों को छोडते रहे तो हो चुकी थानेदारी ! ऐसे हरामियों का तो मैं जानी दुश्मन हूँ। कहाँ यह साला बामन जाति में जनमा और कहाँ इस हरजाई चमाइन के दलदल में पडकर पतित हो रहा है। मैं क्षत्रिय हूँ, इस तरह धर्म का नाश नहीं देख सकता हूँ।''**4**

मुखिया बैजू को एक ओर ले जाता है और जमानत तथा चालीस-पचास रूपयों का इंतजाम करने के लिए कहता है। पर बैजू सिपाहियों के चंगुल में फँसा है। इसलिए मुखिया खुद ही कुछ हथकंडे करके बैजू की जमानत भरता है। इस घटना से बैजू, बैजू की माँ, बिंदिया तथा गेंदा आदि सब उपकृत हो जाते हैं। इसमें मुखिया अपना स्वार्थ भी साधता है।

बैजू की काली करतूतों से सारा गाँव परिचित है। कोई खुलकर उसका विरोध नहीं कर सकता है। मुखिया बैजू को अपना शस्त्र बनाता है। वह गडंत तथा जमानत वाली बात बताकर बैजू को सुमेश के खिलाफ उकसाता है। मुखिया बैजू के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए लोगों से बैजू को अपनाने की बात करते हैं। मुखिया की यह बात किसी के गले नहीं उतरती है। फिर भी मुखिया कहते हैं, ''भाई लोगों ! मैं बैजनाथ को भी सलाह दूँगा कि वे गंगाजी नहा आयें, भागवत सुनें और फिर गाँव भर को भोज दें। यह भोज दो दिन तक चलेगा।''**5** मुखिया द्वारा भोजवाले प्रस्ताव को सुनकर लोगों ने मुखिया के प्रस्ताव को सहमति दिखायी और सब लोग बैजू के यहाँ खाना खाने तैयार हो गए। मुखिया अंत में यह सूचना देते हैं कि, कल गाँव की सभा बुलाएँगे और गाँव के सभी लोगों के सामने यह प्रस्ताव रखेंगे।

नीरू सत्रह साल का हुआ है, इसलिए नीरू की माँ रूपा को नीरू की शादी की चिंता लगी हुई है। नीरू अपना निश्चय बताता है कि वह पचीस साल से पहले शादी नहीं करेगा। इतने में संध्या आती है। नीरू संध्या के साथ ठठोली करता है और किसी अन्य लडकी की बात करता है परंतु नीरू को हँसता हुआ देखकर संध्या कहती है - ''हँसते क्या हो कसाइयों की तरह ? आखिर तुम भी पुरूष हो ना और सुना है पुरूषों को औरतों की तकदीर से मजाक करना अच्छा लगता है।''**6**

आखिर नीरू बताता है कि नीरू जिस लडकी के बारे में बात कर रहा था उसका नाम संध्या है। संध्या सिसकने लगी। उसे लगा कि उसने बिना कारण नीरू के संबंध में संदेह प्रकट किया। इस पर नीरू कहता है कि, ''सभी औरतें समान रूप से शंकाशील होती हैं संध्या! तुम्हारा क्या कसूर ?''**7** नीरू संध्या के सामने संदेह प्रकट करता है कि शायद दोनों के संबंध टूट जाएँगे क्योकिं, नीरू गरीब है इसलिए संध्या के माँ-बाप इस शादी के लिए तैयार नहीं होंगे। संध्या ने नीरू के मन में विश्वास जगाने का प्रयास किया।

संध्या अपने घर चली जाती है। इतने में नीरू देखता है कि कोई काली छाया अधगिरी दीवार को फाँदकर भाग रही है और देखते ही देखते सारे घर को आग लग जाती है। नीरू, उसकी माँ चिल्ला रहे हैं। गाँव के लोग आग बुझाने की कोशिश करने लगे हैं। सबको लगता है कि यह आग बैजू ने ही लगाई है।

नीरू उदास होकर अपने मकान के जले हुए अंशों को देख रहा है। नीरू इस हादसे के बारे में सोच रहा है। सारे खेत मुखिया के पेट में चले गये हैं। घर का सामान बनिए लोगों ने हडप कर दिया है। चारों ओर से कर्ज दहाड रहा है। बैजू भी नया दुश्मन बना हुआ है। नीरू इस हादसे के कारणों पर विचार कर रहा है। बैजू के यहाँ खाने-पीने की समस्या भी इस हादसे का गंभीर कारण है। नीरू को स्मरण हो आता है कि बैजू के घर खान-पान करने के संबंध में मुखिया द्वारा किए प्रस्ताव का गाँव के सभी लोगों ने समर्थन किया था। केवल सुमेश पांडे ने इसका खुलकर विरोध किया था। परंतु मुखिया के आतंक से सुमेश चुप बैठा था। तब नीरू ने मुखिया के प्रस्ताव का निडरता से विरोध किया था। -'' मुखिया अपने घर के मालिक होंगे मेरे घर के नहीं, जाइए ,खाइए आप लोग। आदमी अपने कर्मों से शुध्द होता है, गंगा नहाने से या भागवत सुनने से नहीं। अगर बैजू भाई आज से ही बुरा कर्म करना छोड दें तो सबसे पहले हम लोग खाएँगे उनके यहाँ। मगर नहीं, वे गंगा नहाकर भोज देकर फिर वही बुरा काम करेंगे। हम नहीं खाते उनके यहाँ। ''**8**

नीरू को मलिंद ने बहुत सारी बाते सिखायी थीं। इसलिए वह भरी सभा में बोल सका था। नीरू इस विचार में खो गया है कि संध्या आकर सूचित करती है कि बैजू ने ही नीरू के घर को आग लगाई है। नीरू - मलिंद में नवयुवक संघ की स्थापना करने की बात होती है, पर नीरू को इसमें कोई विश्वास नहीं है।

मुखिया शाम के समय सोचते हुए अपनी खेती से गाँव की ओर जा रहे हैं। मुखिया को नीरू का डर है। क्योंकि मलिंद नीरू का साथ दे रहा है। उनके पास पढे - लिखे लोग तथा नेता लोग आते हैं परंतु महेश के पास केवल गाँव के गुंडई करनेवाले लडके ही आते हैं। मुखिया को लगता है कि नीरू ठीक ही कह रहा था कि,''बैजू खाने-पीने से शुध्द नहीं होगा, अपने कर्मों से शुध्द होगा।''**9**

सामने से आती हुई बिंदिया को मुखिया डाँटते हैं और उसे बैजू का साथ छोडने के लिए कहते हैं बिंदिया वादा करती है कि, वह बैजू के घर नहीं जाएगी, मगर मुखिया के घर जाया करेगी क्योंकि मुखिये के बेटे महेश ने बिंदिया के पैरों पर अपना सिर रख कर अपने यहाँ आमंत्रित किया था। मुखिया को गुस्सा आता है और वे बिंदिया को उजाड कर फेंक देने की धमकी देते हैं।

देश में आजादी का आंदोलन जोरों पर चल रहा है। पांडेपुरवा ग्राम में भी यह आंदोलन पहुँच चुका है। हरिजन नेता फेंकू और बाभन टोली के नेता गनपति पांडे हाथ में तिरंगा झंडा लिए गांधीजी की जय-जयकार बोलते हुए गांव में जुलूस निकालते हैं, मुखिया इस जुलूस का विरोध करता है। उसकी दृष्टि से यह समय की बरबादी है। वह अंग्रेजों का समर्थन करता है और सुराजियों को गालियाँ देता है। जुलूस मलिंद के घर के पास रूक जाता है। मलिंद भाषण देते हुए स्पष्ट करता है कि मुखिया हरिजन और बाभनों में फूट डाल रहे हैं। स्वराज्य पाने के लिए हम सबको एक होना चाहिए। मलिंद लोगों को मुखिया के खिलाफ उकसाना चाहता हैं। परंतु मुखिया के डर से कोई कुछ नहीं बोलता है। आखिर मलिंद ने कहा कि, हमें सबसे पहले आजादी के लिए पुकार लगानी है। गाँव तो धीरे-धीरे ठीक होगा। इसप्रकार जय-जयकार करते हुए जुलूस बिखर गया।

गाँव के कुछ लडके-लडकियाँ प्राइमरी, मिडिल स्कूल तथा तथाकथित अंग्रेजी स्कूल में पढ रहे हैं। पांडेपुरवा गाँव घोर कछार में बसा हुआ है इसलिए यहाँ अंग्रेजी स्कूल की पढाई की कुछ व्यवस्था नहीं है। इसलिए इस कछार के लोगों ने अंग्रेजी स्कूल खोलने की बात निश्चित की। स्कूल खुल भी गया परंतु मास्टर लोगों को वेतन न मिलने से वे स्कूल आए ही नहीं और स्कूल बंद हो गया। अन्य लोगों में से किसीने अपने छोकरे को कहीं न कहीं नौकरी दिलवाई। किसी ने अपने छोकरे को शिक्षा प्राप्त करने के लिए

गोरखपुर भेज दिया। लेकिन बेचारे नीरू के सामने अनेक समस्याएँ थीं इसलिए वह आगे पढ नहीं सकता है। वह घर चलाने के लिए कहीं नौकरी करने का निश्चय करता है। उसने सुना है कि, संध्या पढने के लिए मलिंद के साथ गोरखपुर जा रही है। नीरू को अच्छा लगता है परंतु संध्या शहर जाकर उसे भूल जाएगी इसका डर लग रहा है।

नीरू नौकरी की तलाश में गोरखपुर पहुँच गया। अचानक मलिंद की भेंट हो जाती है, परंतु वह बिना कोई अधिक पूछताछ किए मित्र के साथ टेनिस खेलने चला जाता है। नीरू का भ्रम भंग होता है। मलिंद के व्यवहार से नीरू उदास हो गया तब नीरू के साथ चलनेवाले दहाती ने नीरू को समझाया कि, ''अरे भइया, अभी शहर में नये आए हो न। ये सब शहरी ऐसे ही होते हैं। अपने बाप को तो पूछते ही नहीं।''**10**

इतने में उसे संध्या की पुकार सुनाई देती है। संध्या उसे अपने घर ले जाती है। नीरू की हालत देखकर संध्या को बहुत दु:ख होता है परंतु वह बेबस है। इतने में मलिंद आता है। नीरू ने पढाई बंद कर दी ,यह देखकर मलिंद खेद प्रकट करता है।

बरसात का मौसम शुरू हो गया है, परंतु पानी ही नहीं बरस रहा है। लोग बहुत दिनों तक बारीश की राह देखकर जलती धूल में ही बीज बो रहे हैं और धीरे-धीरे वर्षा शुरू हो जाती है। सारे खेत अंकुरों से भर जाते हैं। गांव के लोग खेतों में काम कर रहे हैं। सब भगवान की प्रार्थना कर रहे हैं कि यह फसल तो बच जाए। परंतु होनी को कोई टाल नहीं सकता है। गौरा और राप्ती नदी में बाढ आ जाती है। पानी जोरों पर बरस रहा है। पानी गांव में घुस गया है। लोग जानवरों के लिए पानी में डूबी फसल काटकर ला रहे हैं चारों ओर हाहाकार मचा हुआ है।

नीरू को इस बात का दु:ख होता है वह अपने घर के लिए कुछ भी नहीं कर पा रह है। दूसरों के सामने हाथ फैलाना नीरू को अच्छा नहीं लगता है। वह सोचता है, 'कहीं नौकरी मिल जाये तो कितना अच्छा हो। गरीबी की यह दुर्दशा यह हीनावस्था, यह हाथ पसारना कब तक चलेगा ? भगवान ! मुझसे सहा नहीं जाता।'' **11**

नीरू को सडक बनाने के काम पर मजदूरों पर निगरानी करने का काम मिल जाता है। परंतु वहाँ भी भ्रष्टाचार का अनुभव होता है और वह काम छोड देता है। नीरू तडपता रहता है। अंत में रामनारायण

कोइरी के द्वारा नीरू को सरैया मिल में नौकरी मिल जाती है। रोज आठ आने वेतन पर फागुन महिने तक उसकी नियुक्ति हो जाती है। गेंदा की शादी बैजू ने एक बूढे के साथ कर दी है। एक महिने में ही गेंदा विधवा हो जाती है। परंतु पति के मरने का उसे कोई दु:ख नहीं हुआ है। क्योंकि उसने पति का कुछ अनुभव ही नहीं किया है। गेंदा का देवर गेंदा को ले जाता है उसका देवर उसे बहुत मानता है। जब से गेंदा ससुराल गई है तब से देवर ने अपनी पत्नी को घर से खदेड दिया है। एक दिन देवरानी वापस आती है। उसके और गेंदा के बीच काफी कहा-सुनी होती है। गेंदा वहाँ से मायके निकल जाती है। गेंदा को विधवा होने का कोई भी गम नहीं है। वह स्वच्छंद बनकर गांव में घूमती है। हर किसी के साथ झगडा करती है और मार-पीट पर उतारू हो जाती है। लोग गेंदा का मुँह देखना अशुभ मानते हैं। एक दिन बैजू किसी शुभ काम के लिए बाहर जा रहा है इतने में सामने से गेंदा आ जाती है। बैजू इसे अशुभ शकुन मानकर घर वापस लौटता है और गेंदा की पिटाई करता है।

चैत महीना शुरू हो गया है। फसलों की कटाई हो रही है। मजूरे मिलना मुश्किल हो गया है इसलिए उनकी छिना-झपटी मच गयी है। धीरे-धीरे गांव के उत्तर टोला और दक्खिन टोला के लोगों में मारपीट शुरू होती है। गांव की नारियाँ भी आपस में झगडने लगती हैं, मुखिया इस झगडे से जान-बूझकर अलग रहता है। गनपति नेता सुराजी दल को लेकर हाथ में तिरंगा पकडे वहाँ पहुँच जाता है और सबको गांधीजी की अहिंसा का उपदेश देकर झगडा बंद करने के लिए कहता है परंतु उसकी कोई नहीं सुनता हैं।

गनपति नेता बता रहा है कि ''शामधारी को अंगरेजी सरकार ने मारा है। अंगरेजी सरकार ने ही भाई-भाई के बीच फूट डाल रखी है, यह जमींदार-आसामी का फर्क बना रखा है।''**12** इसप्रकार नेता गनपति अंग्रेज सरकार पर ताने कस रहे हैं और आनेवाले काँग्रेस सरकार के गुनगान गा रहे हैं। शामधारी की मृत्यु के संबंध में दरोगा साहब तहकीकात के लिए गाँव में आनेवाले हैं। इसलिए गाँव में सनसनी फैल गयी है। दरोगा साहब गाँव में आ पहुँचे हैं। गाँव के लोग डर के मारे दरोगा के सामने आने से बच रहे हैं। दरोगा मुखिया, बेनीकाका, रग्घूबाबा तथा शामधारी की माँ से पूछताछ करते हैं। दरोगा को शामधारी के मामले के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती है। इसलिए वह गुस्से में आकर सबको इस मामले में फँसाना चाहता है। बिगडी हुई परिस्थिति को देखकर मुखिया दरोगा को एक ओर ले जाता है और दरोगा को चार सौ रूपये रिश्वत देकर शामधारी का मामला दबाता है। सुमेस्सर बनिया भी दरोगा को पचास रूपये देकर बिना मार खाये सकुशल बच जाता है।

दरोगा ने गाँव वालों से घूस ली है और शामधारी का मामला दबा दिया है। फरार बैजू

वापस आ गया है। बिंदिया बैजू के साथ अधिक रहने लगी है। उस समय की परंपरा के अनुसार बिंदिया की शादी बचपन में ही हो चुकी है। बिंदिया के पापाचार की खबर किसीने बिंदिया के पति को बताई है इसलिए वह बिंदिया को ले जाने के लिए आता है। बिंदिया की माँ बिंदिया को ससुराल भेजने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए बिंदिया का पति नाराज होकर चला गया है। इस घटना को भी तीन साल हो गए हैं। बिंदिया के पति ने बिंदिया की फिर से चर्चा तक नहीं की है और उसने दूसरी शादी भी कर ली है। तब से बिंदिया बैजू के अधिक निकट आ गयी है। बैजू ने अपने मन की तडपन बिंदिया के सामने प्रकट की है कि बिंदिया ही उसका एक मात्र सहारा है। वह उसे छोडेगी तो बैजू दुनिया में अकेला पड जाएगा। बिंदिया ने कितनी बार बैजू के आँसू पोछे हैं, क्या कहते हो बैजू बाबू! अब तुम्हारे सिवा मेरा और है कौन ? गाँव के लोग हँसते हैं, हँसा करें मुझे उनकी क्या परवाह है ? सैन चलाने वाले सब हैं लेकिन किसी की बाँह पकडकर गुजारा करनेवाला कोई नहीं है। तुमसा कौन है बाबू, जो एक चमाइन को दुनिया के आगे अपना ले।'' **13**

गेंदा शुरू-शुरू में बिंदिया के व्यवहार को देखकर जलभुन उठती है। परंतु बाद में खुद को असहाय महसूस कर चुप हो जाती है। अब उसका सारा समय पूजा-पाठ में बीतने लगा है। लोग कहते हैं कि यह आवारा लडकी अब साक्षात देवी बनी है। परंतु अभी भी इसे चुडैल पकडती है, उसके मुख से झाग उगलवाती है, इसे बेहोश रखती है। मलिंद कहता है कि, यह हिस्टीरिया है परंतु, लोग क्या जानें कि हिस्टीरिया क्या है? उन्हें लगता है कि, ''पढे लिखे लोग अजीब-अजीब नाम बोलते हैं और अपने देवी-देवताओं में अविश्वास कर अंग्रेजों के देवी देवताओं का नाम लिया करते है।'' **14**

पिछले सात-आठ वर्षों से लगातार बाढ आ रही है, अकाल पड रहा है, लोग गाँव छोडकर भाग रहे हैं - ''यह गनपति नेता कहता है कि, अपनी कांग्रेसी सरकार होगी तो यह बाढ नहीं आएगी। बांध बँधवा देगी, सडक बनवा देगी अस्पताल खुलवा देगी, स्कूल बनवा देगी। हाँ-हाँ बहुत कुछ करेगी। वह दिन कब आयेगा भगवान! '' **15**

बिशुलपुर के बाबू गजेंद्रसिंह ने नीरू को अपने यहाँ नौकरी के लिए बुलावा भेजा है। वहाँ प्रति महीना दो रूपये वेतन और खाने-पहनने को मिलता है। नीरू का संवेदनशील हृदय गजेंद्रसिंह की दरबार की क्रूरता से कराह उठता है परंतु नीरू को मन मारकर परिस्थिति के सामने झुकना पडा है। गाँववालों ने नीरू को इस नौकरी का रहस्य बताया तब नीरू को कुछ संतोष हुआ। भले ही नौकरी दो रूप्ये की हो किंतु इसमें आमदनी बडी है। नीरू को हरिपुर की छावनीपर सिनियर तहसिलदार मुन्शिजी दुक्खीलाल के अधीन अनुभव प्राप्त करने के लिए भेज दिया जाता है। वहाँ लगान की वसूली के लिए किसानों पर निर्घृण

अत्याचार देखकर नीरू का दिल फटा जा रहा है। मुन्शीजी नीरू को समझाते हैं - ''अरे, तुम अभी लडके हो इन सभों की बदमाशी नहीं जानते हो अभी नये हो अभ्यास हो जाएगा।'' **16**

चार-पाँच साल ऐसे ही गुजर जाते हैं। नीरू अपने काम में काफी निपुण हो गया है इसलिए गजेंद्रसिंह को नीरू पर पूरा विश्वास हो गया है। नीरू स्वभाव से उदार है और अपनी उदारता के कारण वह दरबार के रीतिरिवाज बिगाड देगा इस संदेह से मुंशीजी उसे सीख दे गये हैं - ''बेटा, रिवाज न बिगाडना---------- यह पेशा सोने के अंडे उगलता है सो धीरे-धीरे अंडे बँटोरना, न तो इन्कार करना, न जल्दी-बाजी करना''**17** उसे पहले तो चीढ आती है परंतु धीरे-धीरे उसे इन घटनाओं की आदत हो जाती है। लक्ष्मी का नशा उस पर छा जाता है फिर भी नीरू की उसकी मेहरबानियों के कारण बडी तारीफ होने लगती है कि, इतना भला आदमी तो इस दरबार में कभी कोई आया ही नहीं। नीरू सिपाहियों को भी संतुष्ट कर देता है इसलिए सिपाही भी उसे आदर और विश्वास देते हैं।

माघ महीना शुरू है। लोग खुश हैं इतने में प्लेग की बीमारी फैल जाती है। लोग प्लेग-प्लेग करके चिल्लाने लगे हैं परंतु गांव के लोग अंधश्रध्दा से इसे भगवती की अवकृपा कहते हैं,गांव में कई दिनों से चर्चा चल रही है कि ,टीका लगाने के लिए डॉक्टर आनेवाला है। गाँव के लोगों की प्रतिकिया देखने लायक है क्योंकि अभी डॉक्टर का कोई पता नहीं है। लोग कहते हैं - ''हाय भगवान,यहाँ डॉक्टर क्यों आएगा? यहाँ तो आता है मालगुजारी वसुल करने के लिए कूर्क अमीन, घूस लेने के लिए थानेदार,यहाँ आती हैं बाढ,आती है महामारी ,आती है भूख.....डॉक्टर क्यों आएगा?.'' **18** बैजू प्लेग का शिकार हो गया है। बिंदिया उसके पास बैठकर उसकी सेवा कर रही है। अंत में बैजू स्वस्थ होता है। सुमेश पांडे गाँव के सबसे सक्रिय व्यक्ति लग रहे हैं,उन्होंने सबके मूर्दोको बिना भेदभाव के मरघट तक पहुँचाने का काम किया है। उन्हें देवी भगवती का वर प्राप्त है इसलिए किसी भी बिमारी-फिमारी का उन्हें डर नहीं है। गाँव के लोग प्लेग का प्रकोप शांत होने के लिए देवी-देवताओं की मनौती कर रहें हैं।

नीरू तेईस साल का हो गया है परंतु विवाह की बात टाल रहा है क्योंकि, अभी भी उसका मन संध्या के प्यार में अटका हुआ है। वह अपनी बहन लीला की शादी का बहाना करता है। उसने अपनी बडी बहन उमा की करूण मृत्यु अपनी आँखों से देखी है इस करूण कहानी की पुनरावृत्ति न हो इसलिए वह लीला के लिए अच्छा घर देख रहा है। उसे अच्छा वर मिल जाता है और उसकी शादी हो जाती है। नीरू का भाई केशव पढाई में तेज है तथा साहित्यकार भी। केशव के मैट्रिक में फर्स्ट आने पर नीरू उसे विश्व-विद्यालय में पढने के लिए भेज देता है। नीरू केशव के रूप में अपने सपने साकार बनाना चाहता है। एक दिन

केशव की चिट्ठी से संध्या की शादी का समाचार मिलता है।नीरू सन्न रह जाता है और गजेंद्रसिंह से छुट्टी लेकर अपने गांव आ जाता है। संध्या से मिलनेपर संध्या अपने अपराध बोध में क्षमायाचना करती है और नीरू को भी शादी करने का आग्रह करती है तथा अपनी शादी तक रूकने के के लिए कहती है। माँ के भी आग्रह करने पर नीरू रूक जाता है. डोली उसके घरके सामने से ही निकलती है। सुबकती संध्या को सब समझा रहे हैं लेकिन नीरू का दर्द, नीरू का रोना किसीने नहीं देखा है। सबके आग्रह पर नीरू बिना कुछ सोचे शादी के लिए सहमति दिखाता है और उसकी शादी हो जाती है।

स्वातंत्र्य आंदोलन जोर पकड रहा है। गणपति ,फेंकू आदि सुराजी लोग तिंरगा झंडा और झोली लिये गली-गली गाँव-गाँव घूमकर चंदा इकठ्ठा कर रहे हैं। सन 1942 का आंदोलन जोरों पर है, नेता लोग जेल में ठूँस दिये गये हैं। नीरू के मन में भी क्रांति की आग में कूद पडने के विचार आ रहे हैं परंतु वह नौकरी नहीं छोड सकता क्योंकि, घर की जिम्मेदारी और केशव की पढाई का सवाल उसके सामने है और गजेंद्रसिंह अंग्रेजों का पिट्ठू होने से उसके यहाँ नौकरी करते हुए क्रांति की धारा में मिलना असंभव है। नीरू कांग्रेसी और क्रांतिकारियों के गुप्त नेता के समान है। नीरू और कांग्रेसी नेताओं के बीच गुप्त मंत्रणा से दूसरे दिन कांग्रेसियों ने स्टेशन पर हमला कर के स्टेशन को आग लगा दी। नीरू अपने आठ-दस आदमियों के साथ हाथ में बंदुक लिये आता है तथा पूर्व योजना के और मंत्रणा के अनुसार कांग्रेसी नेता भाग जाते हैं। स्टेशन मास्तर नीरू की प्रशंसा करता है। और इस तरह नीरू राजभक्ति का ढोंग रचाता है। सरकार का दमनचक्र तेजी से घूम रहा है जनता पर अमानुष अत्याचार होने लगे हैं, दरोगा सिपाहियों को कांग्रेसी नेताओं के घरों को आग लगाने के लिए उकसाता है लेकिन गजेंद्रसिंह के अंग्रेजों के समर्थक होने से सिपाही दरोगा की सलाह नहीं मानते।

एक दिन महेश एक संन्यासी की एक डाकू से जान बचाता है जिसकी मदद से महेश को सी.आय.डी. विभाग में नौकरी मिलती है। राष्ट्रीय आंदोलन की छान-बीन करने के लिए महेश को उसी क्षेत्र में भेजा जाता है जहाँ नीरू नौकरी करता है। महेश ने इस आशय की रिपोर्ट तैयार की कि नीरू सारे उपद्रवों का नेता है। आंदोलनकारियों के साथ नीरू को भी बंदी बनाया जाता है। नीरू को लगता है कि उसकी जिंदगी सार्थक हो रही है। गजेंद्रसिंह जमानत पर नीरू को छुडाता है। सी.आय.डी. रिपोर्ट की फिर से जाँच की जाती है। लोगों की गवाहियों और स्टेशन मास्तर के बयान से नीरू निर्दोष सिध्द होता है। महेश को षडयंत्र के लिए डिस-मिस कर दिया जाता है। एक दिन पार्क में घूमते समय नीरू एक हत्यारे से एक व्यक्ति की जान बचाता है, पता चलता है कि, वह व्यक्ति सी.आय.डी. पुलिस सुपरिनटेंडेंट मिस्टर सुनिल त्रिपाठी हैं जो संध्या का पति है, वे ही महेश को डिस-मिस कर देते हैं। शामधारी की विधवा पत्नी गुलाबी ने धीरे-

धीरे खेत-खलिहान का व्यवहार शुरू कर दिया है। वह कोमल, सुंदरी और गोरी स्त्री होने से गाँव वालों की बुरी नजर उसपर पडती है। टीसून, केदार पांडे और अपने बहनोई के दुर्व्यवहार को गुलाबी को सहना पडता है। बैजू उसे बचाता है और सहारा देता है। वह असहाय, पतित विधवा गुलाबी को अपनाता है जब गुलाबी को बेटा पैदा होता है तब बैजू गांवभर के लोगों को भोज के लिए आमंत्रित करता है। गांव के लोग इसे पापाचार मानकर बैजू के निमंत्रण का बहिष्कार करते हैं केवल नीरू बैजू की बात का समर्थन करता है और बैजू को बधाई देते हुए कहता है - ''मैं जानता हूँ बैजू ने एक ऐसा काम किया है जो आप लोगों के दिलों को धक्का मार रहा है किंतु ----------साहस के साथ दुनिया की झूठी बदनामी की परवाह किये बिना एक नारी का हाथ पकडना और उसकी संतान को अपनी संतान के रूप में स्वीकार करना बहुत बडे पुरूषार्थ का कार्य है। बैजू ने आज एक पवित्र कार्य किया है। मैं उसे बधाई देता हूँ।''[19]

नीरू सोचता हैं कि संध्या से अब उसका कोई संबंध न रहने पर भी परिस्थितियाँ उसे बार-बार संध्या के यहाँ क्यों पटक देती है। बयालिस का आंदोलन ठंडा पड गया है परंतु नीरू के मन में देशभक्ति की भावना दुगुने उत्साह से जाग उठी है। वह जमींदारी के काम से ऊब चुका है लेकिन यह सब वह केशव के लिए कर रहा है। वह अपनी पत्नी से भी 'संतुष्ट नहीं' है। वह सोचता है ----'' न रुप , न गुण, न शील कैसे निबाह होगा इसके साथ। [20] नीरू अब चिडचिडा हो गया है वह किसानों पर निर्घृण अत्याचार करने लगता है। एक मेले के अवसर पर बुलाये गये केशव को नीरू का किसानों के साथ दुर्व्यवहार असहनीय हो जाता है। केशव नीरू के सामने अपनी व्यथा प्रकट करता है। नीरू वादा करता है कि , इसके आगे वह ऐसे अत्याचार नहीं करेगा।

मुखिया के पंख कट चुके हैं। महेश निकम्मा घूम रहा है। नीरू की उन्नति मुखिया को साल रही है इसलिये वह गजेंद्रसिंह के पास नीरू के खिलाफ बार-बार चुगली करता है और संकेत देता है कि, हरिपुर की छावनी से नीरु को हटाकर वहाँ महेश को रखा जाय। वैसे गजेंद्र सिंह नीरू की ईमानदारी तथा होशियारी से परिचित है; पर रोज-रोज की शिकायत से तंग आ गये हैं। नीरू को हटाकर वहाँ महेश को रखते हैं। यह बात नीरु को बुरी लगती है, फिर भी वह अपने नये काम के साथ समझौता कर लेता है। नीरू अपने सिंध्दातों पर अटल ,अचल है। गांव के स्वार्थी लोग मुखिया का पक्ष लेते हैं परंतु बैजू नीरू के पक्ष में है। बैजू को नीरु के घर के साथ किये हुये व्यवहार से ग्लानि हो रही है। एक दिन धीमड और धीरेंदर नीरू का खेत उखाड रहे थे। नीरू के देखने पर दोनों भागने लगते हैं। धीमड पकड में आ जाता है। नीरू से अभय पाकर धीमड सारे अनर्थों की जड मुखिया बताता है। मुखिया ही उन्हें सारे बुरे काम करने पर मजबूर करता है। मुखिया के खिलाफ गवाह मिलता है।

मुखिया के यहाँ काम करने से इन्कार करने की बात को लेकर हरिजन नेता फेंकू और मुखिया में झगडा हो रहा है। मुखिया सुराजियोंको गालियाँ भी देता है। इतने में नेता तिरंगा लिये आनंद से नाचते हुये आ रहा है। गाँव के अन्य लोग भी उसके साथ हैं। वह गांधी नेहरू तथा भारतमाता की जय बोलते हुये आ रहे हैं। वह कहता है-----'सुराज मिल गया'। मुखिया गिरगिट की तरह रंग बदलकर जुलूस का नेतृत्व करना चाहता है किंतु पुलिस द्वारा महेश का पकडे ले जाने का समाचार सुनकर खाटपर धम्मकर बैठ जाता है। नीरू जुलूस का नेतृत्व करता है।

15 अगस्त ,1947 का दिन है पांडे पुरवा गांव में उत्साह का वातावरण फैल गया है। सब लोग इस राष्ट्रीय पर्व पर आनंदोत्सव मना रहे हैं। राष्ट्रगीत गाया जा रहा है। नीरू उल्हास से कह रहा है------''आज हमें आजादी मिली है। अब ये पानी की दीवारें टूटेंगी ,टूटेंगी, बाहर से नयी रौशनी आयेगी। खेतों में नये सपने खिलेंगे -----------बाहर की सुविधाएँ हमारे गाँवों की ओर दौडेंगी।'' 21

नीरू की आवाज में आवाज मिलाकर जुलूस ने बाढ की ओर हाथ उठाकर चिल्लाना शुरू किया ---

''पानी की ये दीवारें टूटेंगी।

नये सपने खिलेंगे ।।

नयी रोशनी लहरायेगी ।।।''

आलोचना -

इस प्रकार 'पानी के प्राचीर' की कथावस्तु के व्दारा यह स्पष्ट होता है कि पांडेपुखा अंचल के सभी लोग एक -दूसरे से कटे हुए हैं तथा परस्पर विरोधात्मक संबंधों में बंधे हुए हैं। आपस में झगडने वाले ये लोग कभी-कभी बाहरी संकट के अवसर पर एक इकाई भी बन जाते हैं। पांडेपुखा के सभी लोगों की स्थिति नीरू के पिता सुमेश पांडे के समान ही है। ये लोग मजबूरियों से घिरे हुए हैं इसलिए ये केवल वर्तमान को ही देख पाते हैं,भविष्य के प्रति उदासीन ही रहते हैं। यह अँचल देश के सामान्य जन-प्रवाह से कटा हुआ दिखाई

देता है फिर भी राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम संबंधी गांधीजी का संदेश यहाँ तक पहुँच गया है। गांव के अनेक लोग इस राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेते हैं परंतु उनमें समझदारी कम है। वे आपसी वैमनस्य की आड में एक दूसरे को नीचा दिखाने के मौके ढूँढते रहते हैं। गांधीजी का तत्वज्ञान इन लोगों में आंतरिक प्रेरणा उत्पन्न नहीं कर सका है, क्योंकि, इन नेताओं का जीवन भी जन सामान्य के समान ही ढुलमुल एवं वैयक्तिक हानि -लाभ से परिचालित हैं। बिंदिया को मलिंद की जमीन में बसा लेने भर से समस्या हल नहीं होजाती है। इसप्रकार के अत्याचार बाद में होते ही रहते हैं। हरिजनों के अधिकारों के लिए चले संघर्ष में फेंकू अधिक निर्णायक भूमिका ले सकता है लेकिन वह भी ऐन मौके पर कमजोर पड जाता है।

पट्टीदारी के वैमनस्य को लेकर जब गाँव के दो दलों में झगडा छिड जाता है,तब गनपति अन्य सुराजियों के साथ वहाँ पहुँचकर सबको गांधीजी का संदेश सुनाता हैं। सबको अहिंसा का उपदेश देकर झगडा बंद करने के लिए कहता है। गनपति की बात कोई नहीं सुनता है।

दारोगा,कुर्क अमीन,जमींदार जैसे लोग किसानों पर अमानुष अत्याचार करते हैं। रिश्वत लेकर बडे-बडे अपराधों को दबाते हैं। मुखिया कर्ज देकर किसानों के खेत हथियाता है। वह लोगों में परस्पर वैमनस्य पैदा करता है और अपना उल्लु सीधा करता है। सारा गांव आर्थिक अभावों से ग्रस्त है। फिर भी गांव के कुछ नवयुवक गोरखपुर जाकर पढाई करते हैं, तो उनका संस्कृत और अंग्रेजी का ज्ञान उन्हें एक-दूसरे के संदर्भ में फेंकू तथा गनपति की भूमिका में लाकर खडा करता है। इस गांव में मलिंद एक ही ऐसा शिक्षादीक्षा प्राप्त व्यक्ति है, जो अपने पास गांव की विषम स्थितियों को समझने परखने की विवेकपूर्ण दृष्टि रखता है।

सामाजिक स्तर पर उपेक्षित,अभावग्रस्त तथा दलित लोगों में समता और स्वाभिमान की भावना जगाना ही स्वराज्य आंदोलन का प्रमुख ध्येय है परंतु गांव के लोग जाति-पाँति,छुआछूत,उँच-नीच आदि भेदभावों में अभी भी जकडे हुए हैं। इसलिए सही बात उनके गले जल्दी नहीं उतरती है। मलिंद की समझदारी कोई विशेष मूल्य नहीं रखती है क्योंकि वह अपने स्वार्थी को सिध्दांतों का जामा पहनाकर दूसरों को अपने लिए इस्तेमाल करता है। वह खुलकर मुखिया तथा बैजू का विरोध नहीं कर सकता है। मलिंद के द्वारा प्रेरणा पाकर ही नीरू गाँव के इन दो कुटिल व्यक्तियों का विरोध करता है। पंरतु नीरू के मन में संदेह उत्पन्न होता है कि,''मलिंद उससे उस्तादी पढ रहा है उसे भाड में झोंककर खुद तमाशा देख रहा है।'' [22] नीरू की प्रतिमा और ओजस्विता से प्रभावित होकर मलिंद जहाँ तक हो सके उसकी सहाय्यता करने का वादा तो करता है परंतु अभाव से जर्जरित नीरू जब बडी आशा से गोरखपुर पहुँचता

है,तब मलिंद नीरू को पहचानने से भी इन्कार कर देता है अंत में मलिंद वकील बनकर गाँव से कट कर ही रहता है।

आर्थिक विषमताओं के कारण गाँव के लोगों का जीवन कलुषित तथा विषाक्त बनगया है इसलिए उनमें प्रेम,करूणा,संवेदनशीलता जैसी सद्भावनाएँ लुप्त-सी हो गई हैं। अज्ञान,पाखंड,विद्वेष, विश्वासघात आदि उनके स्वभाव के स्थायी अंग बन चुके हैं अपने छोटे-छोटे स्वार्थो के कारण आत्मकेंद्रित बना हुआ गाँव सामूहिक जडता तथा दिशाहीनता का प्रतीक बन गया है उनके सामने न कोई ध्येय है,न कोई उद्देश्य। इस गाँव में नीरू ही एक ऐसा व्यक्ति है जो गाँव की प्रतिकूल,अमानवीय स्थितियों को चुनौती देता है वह शोषण,दमन,अन्याय तथा अत्याचार का खुलकर विरोध करता है वह गाँव में अंधकार की कालिमा को चुनौती देनेवाले प्रकाश- पुंज की तरह उभर रहा है नीरू जैसे - जैसे अपनी मर्यादाओं से अवगत होता है वैसे-वैसे उसकी न्याय और समता के लिए संघर्ष की चेतना कुंठित होती- सी दिखाई देती है परंतु जमींदार गजेंद्रसिंह के यहाँ नौकरी करते हुए नीरू के जीवन की विडंबना सामने आती है।अन्याय,अत्याचारों का सामना करनेवाला नीरू अंत मैं खुद ही अन्याय अत्याचारों को जन्म देनेवाली अमानवीय व्यवस्था का अंग बन जाता है। जमींदार के यहाँ किसानों पर होनेवाले अत्याचार देखकर वह कराह उठता है,लेकिन बाद में खुद ही लगान वसूल करने के बहाने किसानों पर निर्मम अत्याचार करने लगता है। वह कभी-कभी एकांत क्षणों में रोता भी है किंतु बाद में लक्ष्मी का नशा उसपर छा जाता है और एकांत में सोचना वह बंद कर देता है। इस प्रकार **'' नीरू के माध्यम से जैसे लेखक ने आज की संपूर्ण व्यवस्था के अमानवीकरण की प्रक्रिया का ठोस मानवीय स्थितियों के बीच से गुजरते हुए संवेदनशील और कलात्मक उद्घाटन किया है''।** *23*

गाँव से शहर पहुँचकर थोडी सी शिक्षा पाने के बाद संध्या गांववालों का तिरस्कार करती है लेखक ने संध्या के माध्यम से गांव के लोगों की विकृतियों का खुलकर चित्रण किया है। यौवन के प्रभाव के कारण गेंदा जिन गंदी चेष्टाओं को अभिव्यक्त करती है, वे जुगुप्सा से प्रेरक हैं परंतु वह बैजू द्वारा प्रताडित हो जाने पर खुद को बेसहारा अनुभव करती है और खुद को संयम की आग में झोंक देती है उसकी करूण विवशता सबको अभिभूत कर देती है। गाँव के लोंगों में अनेक विकृतियाँ हैं,अंध.विश्वास हैं आये दिन गांव में चोरी डकैती,लडाई झगडा होता ही रहता है लोग एक दूसरे का खेत उखाडते हें,घर जलाते हें परंतु इतना होकर भी यह दिखाई देता हे कि गाँव के लोग कठोर परिश्रम करते हैं। ''पर इनके परिश्रम का फल या तो नदियाँ अपने हिस्से में कर लेती हैं या जमींदार,मुखिया,सरकारी कानून। इस तरह इनके हिस्से सिर्फ़ श्रम बचता हैं।'' **24** बैजू व्दारा बिंदिया चमाइन तथा विधवा गुलाबी को अपनाना गांव के लोगों को अखरता है

वे खुलकर बैजू का विरोध करते हैं। यहाँ तक की गांधीजी के सुधारवादी तत्वों को अपनाने वाले फेंकू जैसे नेता भी इसे अशनायी का मामला समझते हैं। अभावग्रस्त विषम स्थितिया चारित्रिक दुर्बलतायें उत्पन्न करती हैं और नीरू जैसा चरित्र भी अमानवीय व्यवस्था के समक्ष लडखडाता है तो अन्य चरित्रों की बात ही क्या है? सच बात तो यह है कि, लोगों के पास उन शक्तियों को पहचानने की क्षमता नहीं है, जो उनका शोषण करती हैं। लोग जानते हैं कि,शामधारी की हत्या बैजू ने की है-लेकिन नेता गनपति को लगता है कि शामधारी को बैजू ने नहीं अंग्रेज सरकार ने मारा है। अंग्रेज सरकार ने ही भाई-भाई के बीच फूट डाली है।इतने बडे कछार में रास्ते नहीं बनवाये हैं,अस्पताल नहीं खोला है। उन्होंने हमारी जिंदगी पायमल कर दी है।

ब्रिटीश साम्राज्यवादी शोषण तथा दमन के प्रबल समर्थक होने पर भी गजेंद्रसिंह के प्रति पांडेपुरवा के लोगो में उनके प्रति घृणा या आक्रोश नहीं दिखायी देता है क्योंकि वे तो प्राय: गुलाबों के बीच ही टहलते हुए दिखायी देते हैं। उनके नौकर और खासकर के नीरू ही उनके लिए अमानवीय तथा घृणित कृत्य करता रहता है।

अभावों के बावजूद भी पांडेपुरवा गांव के लोगों के बीच क्रियाशीलता बनी रहती है। हर साल नदी की बाढ में उनका सब कुछ बह जाता है,परंतु उनके मनमें सदैव यह उम्मीद बनी रहती है कि शायद अब भी कुछ हो जाए। इस प्रकार कहा जा सकता है कि ,'पानी के प्राचीर' एक पिछडे हुए और अभावग्रस्त अंचल के अभावग्रस्त लोगों की संघर्षशील जीवन गाथा है,उम्मीद की रचनात्मक तलाश है, व्याख्या भी।

वस्तु.शिल्प-

_'पानी के प्राचीर ' का शीर्षक चयन अपनी वस्तु के अनुरूप है। परतंत्रता की बेडी में जकडे हुए भारत के गाँव लंगडे हैं। प्रगति और विकास की संभावनाएँ रूकी हुई हैं।''राप्ती और गौरा नदियों की धाराओं से घिरा हुआ भू-भाग जो युगों से अपनी सारी हरियाली इन नदियों की मूखी-धाराओं को लुटाकर केवल विवशता,अभाव और संघर्ष के रूप में शेष रह गया है। संसार के सारे सूत्रों से कटा हुआ यह प्रदेश अपने आप में एक संसार है। प्राचीरों के समान नदियों की धाराओं ने इसे बंदी बना रखा है।'' **25**

नदियों की धाराओं या पानी के प्राचीरों में बंद भू-भाग की कथा को उपन्यास में संजोने का प्रयत्न लेखक ने किया है। उपन्यास का कथानक विधान अपनी एक विशेषता रखता है। छोटी-छोटी कथा धाराएँ और दृश्यचित्र उभरते हैं,विलुप्त हो जाते हैं। फिल्म या कैमेरे के दृश्य चित्रों के सादृश्य पर इन्हें देखा जा सकता है। इनका प्रभाव सम्मिलित रूप से पडता है, एक दृश्य से नहीं। इनका स्वयं लेखक वर्णन

प्रस्तुत करता है। परिणाम स्वरूप उपन्यास का कथानक कई स्थल पर विखर गया है। आँचलिक कथा विधान का संपूर्ण निर्वाह करने में असफल हो गया हैं। नीरू दो-तीन बार पांडे-पुरवा गांव छोडकर गोरखपुर जाता है और लेखक प्रत्यक्ष रीति से शहरी कथा कहने लगता है। यद्यपि शहर की कहानी बहुत संक्षिप्त है तथापि आँचलिक विधान में यह बाधा डालता है। आँचलिक कथाशिल्प में प्रत्यक्ष रीति से चित्रित वर्णन क्षेत्र से अलग भटकना आँचलिकता में विखराव उत्पन्न करता है। पात्रों की बहुलता भी कथासूत्रों को बिखराने का कारण बनी हुई है।आँचलिक शिल्प-विधान के अनुरूप उपन्यास में बहुपात्रों की योजना की गयी है। विविध पात्र अपने अलग-अलग व्यक्तित्व चित्रों के द्वारा पांडे-पुरवा गांव को विविधता एवं समग्रता में स्पंदित करते हैं।

डॉ. रामदरश मिश्र के शब्दों में -

'' 'पानी के प्राचीर' गोरखपुर जिले के दो नदियों से घिरे हुए एक पिछडे भू-भाग की कहानी कहता है। कहानी स्वाधीनता-प्रप्ति तक की है। स्थानीय जीवन के समस्त सत्यों और पक्षों को चित्रित कर इस भू-भाग के संश्लिष्ट व्यक्तित्व के माध्यम से राष्ट्र और युग की चेतना ध्वनित है। इसीलिए कथानक एक दिशा- प्रवाही नहीं है वह अनेक कोणों से उभरती जीवन कथाओं की संश्लिष्ट बुनावट है।'' 26

शैली के बाहय रूप का संबंध कथा संगठन के साथ होता है। आँचलिक शैली के इस रूप में उपन्यासकार कथातत्व का विघटन कर देता है और किसी एक कथा को मुख्य कथा बनने नहीं देता। इसके लिए वह आँचलिक जीवन के विभिन्न पक्षों से संबंधित कथाओं को एक सूत्र में गूँथ देता है। आँचलिक उपन्यास की कथावस्तु में अन्य साधारण उपन्यासों की कथावस्तु की तुलना में एक प्रमुख अंतर दिखाई देता है। अन्य उपन्यासों की कथावस्तु में फैलाव(विस्तार) होता है तो आँचलिक उपन्यासों की कथावस्तु में बिखराव। 'पानी के प्राचीर'में अनेक कथाओंको एक सूत्र में पिरोने का प्रयत्न अवश्य है,पंरतु कथागत बिखराव में कथा की अनेक दिशाएँ हैं **''अंचल-जीवन की विशालता और विविधता को देखते हुए उसकी कथा योजना में बिखराव का होना अत्यंत स्वाभाविक है। इसीलिए आँचलिक उपन्यासों की कथा-योजना में आधिकारिक कथा या केंद्रीय कथा की संभावना नहीं होती।' मैला आँचल' में डॉ. प्रशांत तथा कमला की कथा,'पानी के प्राचीर 'में नीरू और संध्या की कथा,'जल टूटता हुआ ' में सतीश के संघर्ष की कथा,'सागर लहरें और मनुष्य' में रत्ना की कथा अधिकारिक कथा होने का आभास देती हैं परंतु सभी उपन्यासों में अनेक बिखरी हुई कथाओं में से ये कथाएँ भी मात्र एक कथा**

है और सभी कथाएँ अँचल-रूपी महानायक के जीवन के विविध पहलुओं को प्रकाशित करनेवाली कथाएँ हैं। कई कथाएँ साथ-साथ या अलग अलग चलती हैं और अंचल का जीवन ही उन्हें एक सूत्रता प्रदान करता है।'' [27]

आँचलिक उपन्यासों की कथावस्तु पंरपरागत वस्तुयोजना की व्यापकता में आधिकारक-कथा ,प्रांसगिक-कथा एवं अन्य उपकथानकों का संयोजन आवश्यक उपादान के रूप में नहीं होता। उनसे कथानक के विभाजन का कोई आधार प्राप्त नहीं होता। वे तो मात्र आँचलिक जन-जीवन का चित्रण प्रस्तुत करती हैं। जनजीवन को चित्रित करने में कोई एक कथा तुलनात्मक दृष्टि से अधिक प्रभावी हो सकती है,पंरतु सभी का महत्व समान और लक्ष्य आँचलिक जन-जीवन का समग्र अंकन होता है। और जीवन की नाना अवस्थाओं का उद्घाटन होता हैं। इस संदर्भ में रामदरश मिश्रजी का उपर्युक्त कथन द्रष्टव्य हैं। उपन्यास में अनेक पात्रों की विभिन्न दिशागामी कथाएँ हैं। नीरू की कथा केंद्रिय कथा का आभास देती है और सुमेश पांडे,संध्या,मलिंद,महेश विंदिया गेंदा,मुखिया,रघ्घूबाबा,फेंकू,शामधारी आदि से संबधित विभिन्न कथा सूत्रों को संश्लिष्ट रूप देने का सफल प्रयास है।

''उपन्यास की कथावस्तु में बिखरात है,इसका कारण है किसी ठोस केंद्रीय कथा की अनुपस्थिति। यहाँ कथाकार की दृष्टि अँचल केंद्रित है,अत: कथावस्तु में पांडेपुरवा के जीवन वैविध्य को प्रकट करनेवालेअनेक खण्डचित्रों की भरमार है।आँचलिक उपन्यासों में कथानक अँचल केंद्रित होता है इसलिए उस अँचल विशेष के जन उनके क्रियाकलाप ,उनकी स्थितियाँ,घटनाएँ आदि उसी रंग में रंगी होती हैं । और उनकी परंपराएँ प्रगति विश्वास (अंधविश्वास भी),स्वार्थ,निरीहता,भोलापन कथानक केअविभाज्य अंग बन जाते हैं। ये सब कथाकलेवर में गूँथकर नया रूप धारणकर लेते हैं। इस प्रकार विविध जीवन रंगों के तानेबाने से बुना कथानक अधिक सुंदर और संवेदना को विस्तार देने वाला बन जाता है। [28]

'पानी के प्राचीर' की कथावस्तु पर यह कथन पूर्णत: लागू होता है।

'पानी के प्राचीर 'की कहानी केवल पांडेपुरवा गाँव की कहानी नहीं है,वरन् राप्ती और गौरा नदियों की धाराओं से घिरे विशाल भू-भाग की कहानी। वहाँ रहनेवाले प्रत्येक व्यक्ति की कहानी है। गाँव में सभी प्रकार के लोग हैं।जमींदार भूपेंद्र सिंह तथा गाँव के मुखिया को छोडकर प्राय: सभी निर्धनता एवं बेबसी की जिंदगी बिताते हैं। छोटे-छोटे स्वार्थों को लेकर आये दिन संघर्ष होता है और इस संघर्ष के बीच कथासूत्र खुलते एवं विकसित होते हैं। **''कथानक के माध्यम से लेखक ने अस्पृश्यता,विधवा विवाह,वर्ग**

भावना,महाजनों की सूदखोरी एवं शोषण बाढ के विनाशकारी प्रभाव,अशिक्षा,अज्ञानता और निर्धनता से छटपटाते हुए लोगों की समस्याओं के व्यापक चित्र उपस्थित किए हैं।'' [29] लगता है,लेखक को जैसे पांडेपुरवा गाँव की कथा कहते समय वहाँ के खेत खलिहान,भूमि पेडपौधों एवं एक एक कण धरती का अनुभव हो। अपने जीवन्तअनुभवों के आधार पर स्वाधीनता पूर्व भारत के गाँव की कहानी उजागर करता है।इस कहानी के भूखे लोग छटपटाते हैं,एक एक रोटी के लिए हड्डी तोड परिश्रम करते हैं रक्त बहाते हैं,जल्लाद जमींदार शोषण करते हैं,विदेशी सरकार जुल्म और अत्याचार की संगीनें भोंकती हैं ,पुलिस रक्षा करने के बजाय गाँव आने की कींमत वसूल करती है। ऐसी अन्याय पूर्ण कई घटनाओं के यथार्थ चित्र उपन्यास में अंकित हैं। आँचलिक शिल्प विधान के अनुसार उपन्यास में बहुपात्रों की योजना की गई है। क्योंकि इस में चित्रित अंचल की सचाइयों को अपने बहुविधरूप में प्रकट किया जा सके। आँचलिक उपन्यास की कथावस्तु की एक और विशेषता है कि उनमें प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी ताकतों का संघर्ष सतत बना रहता है। अंचल के अधिकांश जीवन को यही संघर्ष आंदोलित,हिल्लोलित रखता है।आलोच्य उपन्यास में भी नीरू मलिंद संध्या, रघ्घूबाबा, फेंकू,गनपति जैसे प्रगतिशील और मुखिया महेश,भूपेंद्रसिंह जैसे प्रतिक्रियावादी पात्रों का सदैव संघर्ष चित्रित है। शिक्षा और सामाजिक राजनैतिक चेतना के फलस्वरूप कुछ ग्रामीण पात्र पिछडेपन से ऊपर उठकर परिवर्तन की भावना से ओत प्रोत हैं और शेष समूचा अंचल परंपरावादी संस्कारों एवं अशिक्षा की छाया में साँस ले रहा है। इनमें संघर्ष स्वाभाविक है और यही संघर्ष कथावस्तु को गति प्रदान करता है।

खण्ड चित्रों एवं शब्द चित्रों से समन्वित इस कथानक में प्रतीकात्मक विन्यास भी देखा जा सकता है। मुखिया एवं जमींदार शोषक वर्ग के प्रतीक हैं और गाँव के अन्य पात्र शोषित। नीरू मलिंद आदि जागरण के प्रतीक हैं। इन पात्रों के संघर्ष के बींच कथा दृश्य उभरते एवं विलीन होते हैं।

'पानी के प्राचीर ' के विविध दृश्य एवं विविध बहुल पात्र नदी की छोटी-बडी लहरों की भाँति हैं,जो लहराते हैं , परस्पर मिलते हैं,टकराते हैं,अलग अलग दिखाई देते हैं,लेकिन नदी से अलग नहीं होते। संपूर्ण पात्र लहरों की भाँति पांडेपुरवा नदी के व्यक्तित्व को विविध आयामों एवं कोणों में प्रस्तुत करते हैं।

इस प्रकार **" 'पानी के प्राचीर 'रेणु और नागार्जुन की अपेक्षा कम प्रचार मिलने के बावजूद ,पूर्वी अंचल को पर्याप्त कौशल पूर्ण ढंग से उभारने तथा छटपटाती हुई मानवीय आत्मा के तंतुओं को बारीकी से पडताल करने के कारण एक महत्वपूर्ण कृति है।''इस प्रदेश की व्यापक पृष्ठ**

भूमि पर जो मानवमूल्यों और उच्यतर जीवन सत्यों कें जो रूप उभरे हैं,वे एक देशीय न होकर पूरे समाज के हैं।'' 30

निष्कर्ष

आंचलिक कथाकार किसी एक अंचल का कथावस्तु के रूप में चयन करता है। कथानक अंचल केंद्रित होता है इसलिए उस अंचल विशेष के जन, उनके क्रियाकलाप, घटनाएँ, उसकी परंपरा, स्वार्थ, निरीहता अंध:श्रध्दा,जातिभेद,प्रगति,विश्वास आदि कथानक के अविभाज्य अंग बन जाते हैं तथा अंचल विशेष की प्राकृतिक विभिन्न गतिविधियों का भी वहाँ के मौसम,अकाल,बाढ आदि के रूप में आनेवाली प्राकृतिक विपदाओं का भी सम्यक चित्रण किया जाता है। आँचलिक उपन्यासों की कथा योजना की विशेषता यह है कि,उनमें प्रगतिशील और प्रतिक्रियावादी ताकतों का संघर्ष सतत बना रहता है। यथार्थ के प्रति गहरी आस्था आँचलिक कथाकारों की महत्वपूर्ण विशेषता है।

'पानी के प्राचीर' का लेखक रामदरश मिश्र अपने उपन्यास के अंचल से भातिभाँति परिचित है। गोरखपुर जिले की दो नदियों से घिरे हुए एक पिछडे भू-भाग की कहानी आलोच्य उपन्यास में कही गयी है। उपन्यास की भूमिका में उपन्यासकार ने स्पष्ट किया है कि, यह विशाल भू-भाग युगों से अपनी सारी हरियाली दो नदिर्यो की भूखी धाराओं को लुटाकर विवशता,अभाव और संघर्ष के रूप में शेष रह गया है। स्थानीय जीवन के समस्त सत्यों और पक्षों के संश्लिष्ट रूप को उभारने के प्रयत्न में कथानक एक दिशा प्रवाही नहीं है वह अनेक कोणों से उभरती जीवन कथाओं की संश्लिष्ट बुनावट है।उपन्यास की मुख्य कथा सत् और असत् के संघर्ष की कहानी है। सांस्कृतिक सामाजिक एवं आर्थिक संघर्ष भी इसके साथ जुडे हुए हैं।प्राकृतिक प्रकोप का शिकार यह ग्रामांचल जमींदारों,पूँजीपतियों और पुलिस के शोषण और अत्याचार का शिकार है। गाँव में अत्यधिक फूट आपसी वैरभाव बडी मात्रा में है।उसके अंध:श्रध्दालू संस्कार उसके पिछडेपन के लिए उत्तरदायी हैं। इन सारी दु:स्थितियों में पले हुए इसअंचल की आत्मा छटपटाती रहती है। निराशा के अंधेरे ने इस अंचल को ग्रास रखा है।परंतु उपन्यासकार आशावादी भी है। उपन्यासकार ने नीरू,संध्या,मलिंद,रग्घूबाबा,फेंकू जैसे पात्रों के माध्यम से अपना आशावाद अभिव्यक्त किया है।ये पात्र नयी चेतना के प्रतीक बनकर आते हैं और आशावादी संदेश के साथ उपन्यास समाप्त हो गया है। पानी की दीवारें टूटेंगी! बाहर से नयी रोशनी आएगी!! खेतों में नये सपने खिलेंगे !!!

घटनाओं की बहुलता,पात्रों की बहुलता और उनके अपने-अपने कथाभाग आदि के कारणों

से कथा एक सूत्र में नहीं बढती है तो उसमें एक बिखराव उत्पन्न हुआ है। रामदरश मिश्र ने निम्नलिखित पंक्तियों में इस तथ्य को स्पष्ट किया है-

''कथानक एक दिशा-प्रवाही नहीं है,वह अनेक कोणों से उभरती जीवन कथाओं की संश्लिष्ट बुनावट है।''आँचलिक उपन्यासकार का उद्देश्य व्यापक जीवन की कथा कहना नहीं ,एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों की जीवनगत सामान्य समस्याओं का उद्घाटन करना नहीं बल्कि एक अंचल विशेष की विशिष्ट जीवन प्रणाली,समस्याओं,संस्कृति,लोकाचार,परिवेश,जीवन-संघर्ष,पारस्परिक अंतर्विरोध,बदलाव तथा सामाजिक,सांस्कृतिक मूल्य विघटन आदि को उनकी समग्रता में प्रामाणिक संदर्भों के साथ उद्घाटन करता होता है,इसीलिए उसकी कथावस्तु में बिखराव का होना स्वाभाविक ही है' ------- लेकिन यह आँचलिक उपन्यासों के कथावस्तु-संयोजन-शिल्प की असफलता नहीं,शैल्पिक विशेषता है।'' 32

'मैला आँचल ','परती:परिकथा','जल टूटता हुआ','कबतक पुकारूँ' 'सागर लहरें और मनुष्य' 'पानी के प्राचीर' आदि उपन्यास इसके उत्तम उदाहरण हैं।

'पानी के प्राचीर ' उपन्यास में अनेक पात्रों की विभिन्न दिशागामी कथाएँ हैं।नीरू की कथा केंद्रीय कथाका आभास देती है और सुमेश पांडे,संध्या,मलिंद,महेश,बिंदिया,गेंदा,मुखिया आदि से संबंधित विभिन्न कथा सूत्रों को संश्लिष्ट रूप देने का सफल प्रयास है ।

उपन्यास में अनेक कथाओं,उपकथाओं को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास है,परंतु कथागत बिखराव में कथा की अनेक दिशाएँ हैं । कथावस्तु के बिखराव का प्रमुख कारण है किसी ठोस केंद्रीय कथा की अनुपस्थिति। यहाँ कथाकार की दृष्टि में अँचल केंद्रीय है और कथावस्तु में पांडेपुरवा के जीवन वैविध्य को प्रकट करलेवाले अनेक खण्ड चित्रों की भरमार है।

उपन्यास में प्रतीकात्मक विन्यास भी है। उपन्यास में प्रगतिवादी और प्रतिक्रियावादी प्रवृत्तियों के बीच संघर्ष स्वाभाविक है और वही संघर्ष कथानक को गति प्रदान करता है।उपन्यास के विविध दृश्य और पात्र लहरों की भाँति पांडेपुरवा नदी के व्यक्तित्व के विविध आयामों एवं कोणों में प्रस्तुत करते हैं। इस प्रदेश कीव्यापक पृष्ठभूमि पर जो मानव मूल्यों और उच्यतर जीवन सत्यों के रूप उभरे हैं वे एक देशीय न होकर पूरे समाज के हैं । पर्याप्त प्रचार न मिलनेके बावजूद भी पूर्वी अंचल को कौशलपूर्ण ढंगसे उभारने

तथा छटपटाती हुई मानवीय आत्मा के तंतुओं को बारीकी से पडताल करने के कारण 'पानी के प्राचीर' एक महत्वपूर्ण कृति है।

12922
A

संदर्भ - संकेत

1 डॉ. आदर्श सक्सेना : हिंदी के आँचलिक उपन्यास और उनकी शिल्पविधि पृ. 132
2 डॉ.रामदरश मिश्र :'पानी के प्राचीर': पृ. 10-11
3 वही पृ. 15
4 वही पृ. 44
5 वही पृ. 53
6 वही पृ. 59
7 वही पृ. वही
8 वही पृ. 65
9 वही पृ 71
10 वही पृ. 97
11 वही पृ. 105
12 वही पृ. 142
13 वही पृ. 156
14 वही पृ. 157
15 वही पृ. 158
16 वही पृ. 161
17 वही पृ. 165
18 वही पृ. 169
19 वही पृ. 207
20 वही पृ. 211
21 वही पृ. 233
22 वही पृ. 65
23 महावीर सिंह चौहान :'रामदरश मिश्र की सृजन-यात्रा : पृ. 81
24 वही पृ. वही
25 'पानी के प्राचीर': की भूमिका से
26 डॉ. रामदरश मिश्र: 'हिंदी उपन्यास एक अंतर्यात्रा': पृ. 207
27 डॉ.जवाहर सिंह: हिंदी के आँचलिक उपन्यासों की शिल्प विधि.पृ. 114
28 डॉ.नगीना जैन: आँचलिकता और हिंदी उपन्यास पृ. 37
29 डॉ.प्रदीप कुमार शर्मा.:हिंदी उपन्यासों का शिल्प विधान पृ. 228
30 वही- पृ. 232
31 डॉ.रामदरश मिश्र: 'पानी के प्राचीर': की भूमिका या पूर्वाभास से
32 जवाहर सिंह : हिंदी के आँचलिक उपन्यासों की शिल्पविधि पृ. 111